विद्या भवन बालिका विद्यापीठ

शक्ति उत्थान आश्रम लखीसराय

विषय संस्कृत व्याकरण 29 जून 2020

वर्ग अष्टम राजेश कुमार पाण्डेय

स्मरणीयम्

क्रिया के मूल रूप को संस्कृत में धातू कहते है।

सभी धातुओं को दस गणों (वर्गों) में बांटा गया है।

प्रत्येक गण का नाम उस वर्ग की पहली धातु के नाम पर रखा गया है।

सभी धातुओं को तीन वर्गों में रखा जा सकता है। — परस्मैपदी, आत्मनेपदी तथा उभयपदी।

प्रत्येक वर्ग में धातु के साथ 9 तिङ् प्रत्येक जोड़े जाते हैं।

तीन वचनों तथा तीन पुरुषों के सापेक्ष में एक काल विशेष में एक धातु के 9 रूप बनते हैं।

प्रत्येक धातु के काल तथा भाव के आधार पर 10 लकारों के रूप अलग-अलग होते हैं।

विधालयीय पाठ्यक्रम में केवल पाँच लकार हैं। वे इस प्रकार हैं। – लट्, लृट्, लङ्, लोट् और विधिलिङ्।

लट् लकार का प्रयोग वर्तमान काल के लिए, लृट् लकार का प्रयोग भविष्यत् काल के लिए तथा लङ् लकार का स्वर योग भूतकाल के लिए होता है।

सभी धातुओं के रूपों का प्रयोग तीनों लिङ्गों मैं समान रूप से किया जाता है